IOSR Journal of Humanities and Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 31, Issue 1, Series 1 (January, 2026) 161-165
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

"प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप के अमूर्त कलाकार वी0एस0 गायतोण्डे की कला यात्रा : एक अध्ययन"

उमैरा परवीन
शोधार्थी
चित्रकला विभाग
एम0एच0पी0जी0 कॉलेज, मुरादाबाद

प्रो0 नरेन्द्र सिंह
प्रोफेसर/शोध निर्देशक
एम0एच0पी0जी0 कॉलेज
मुरादाबाद

सारांश

बीसवीं शताब्दी के मध्य में भारतीय समकालीन कला परिदृश्य एक क्रांतिकारी परिवर्तन से गुजर रहा था। 1947 में स्थापित 'प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप' (मुंबई) ने औपनिवेशिक अकादमीवाद और पारंपरिक पुनरूत्थानवादी शैलियों को नकारते हुए आधुनिक कला चेतना का विस्तार किया। इस समूह के प्रमुख कलाकारों (एफ0एन0 सूजा, एम0एफ0 हुसैन, एस0एच0 रजा) के साथ वासुदेव शांतु गायतोण्डे (1924–2001) का जुड़ाव भारतीय चित्रकला के इतिहास में एक नया अध्याय साबित हुआ। गायतोण्डे प्रायः मई तक दिल्ली में काम करते थे और बरसात में मुम्बई के ताजमहल होटल की गैलरी में प्रदर्शनी किया करते थे। ऐसे ही एक प्रदर्शनी में अन्तिम दिन तक उनका एक भी चित्र बिक नहीं पाया लेकिन अन्तिम दिन 'पण्डोल' के मालिक काली पंडोल ने प्रदर्शनी देखी और सारे चित्र ख़रीद लिये। उसके बाद गायतोण्डे ने केवल पंडोल को ही अपनी पेंटिंग्स दिखायी। इसी पंडोल की स्मृति में पंडोल आर्ट गैलरी में एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

चित्रों को 'अमूर्त' की परिभाषा में जकड़ना या उनका वर्गीकरण करना उन्हें पसन्द नहीं। पेंटिंग यानी बस पेंटिंग। जिस तरह प्रत्येक व्यक्ति मनुष्य होता है, चाहे वह हिन्दू हो या ईसाई, उसी तरह पेंटिंग की कोई जाति नहीं होती, कोई धर्म नहीं होता। पेंटिंग केवल पेंटिंग होती है प्रकाश और रंगों का खेल मात्र। फिर भी चित्र बनाने की उनकी शैली हमेशा बदलती रहती है।

गायतोण्डे ने सर जे0जे0 स्कूल ऑफ आर्ट, मुंबई से कला शिक्षा प्राप्त की। आरम्भिक चरण में उन पर पॉल वली और भारतीय लघुचित्र शैली का स्पष्ट प्रभाव था, किंतु शीघ्र ही वे रूपवादी बंधनों से मुक्त होकर 'अमूर्तता की ओर अग्रसर हुए'।

कुँजी शब्द : दृश्यमान, विलोपन, रूपवादी, अमूर्त, चित्रकार, ब्राह्मी लिपि, आध्यात्मिक, पौराणिक संदर्भ, गतिशीलता।

प्रारम्भिक चरण

1950 के दशक के उत्कर्ष तक गायतोण्डे के चित्रों में आकृतियों का क्रमिक विलोपन दिखाई देता है। गायतोण्डे जी ने सन् 1948 में जे.जे. स्कूल ऑफ़ आर्ट्स से कला विषय में डिप्लोमा प्राप्त किया। उसके तुरन्त बाद ही बॉम्बे ग्रुप की प्रथम चित्र प्रदर्शनी में भाग लिया। उस ग्रुप में उनके अलावा हेब्बार, गाडे, सामन्त आदि शामिल थे। परन्तु उसके बाद उन्होंने अपने–आपको इन सबसे कुछ दूर ही रखा। अपने आत्मतत्व के विपरीत जो कुछ भी हो, उस सबको अलग हटाते हुए वे स्वयं की खोज में लगे रहे।

गायतोण्डे जी ने कुछ समय तक भुलाभाई मेमोरियल इन्स्टीट्यूट के स्टूडियों में काम किया। वहाँ वे संगीत, नाट्य और साहित्य से प्रभावित हुए, परन्तु साल–दर–साल उनकी शैली अधिकाधिक अमूर्तता का प्रयोग करते हुए और वस्तुनिष्ठ तकनीक के परे जाते हुए जेन तत्व से प्रभावित हुए और एक उदत्तता की ओर उनकी यात्रा शुरू हुई।

गायतोण्डे जी की बुद्धिमत्ता कुछ दुर्लभ प्रकार की ही थी। उनके सम्बन्ध में जैसा कि एक बार रिचर्ड बार्थोलोम्यू ने कहा था, वे 'सचमुच एक शान्त व्यक्ति और कल्पना के शान्त पर्यावरण के चित्रकार' हैं।

- **पॉल क्ली और लघुचित्र शैली का प्रभाव**

क्ली की रेखांकन शैली और वर्ण–संयोजन ने गायतोण्डे को गहराई से प्रभावित किया। उन्होंने क्ली से सीखा कि कला केवल दृश्यमान को चित्रित नहीं करती बल्कि अदृश्य को बनाती है।

वह जीवन के प्रारम्भिक काल में वे पॉल क्ली के चित्रों से काफ़ी प्रभावित हुए थे। उनके पुश्तैनी घर में चित्र बनाने के लिए कोई जगह नहीं थी। उन्हें काम करने के लिए एक छोटा–सा कोना मिलता था। बड़े चित्र बनाने के लिए घर में जगह न होने का ही शायद यह परिणाम था कि उन्हें क्ली के छोटे कैनवास और जलरंगों के चित्रों ने प्रेरित किया।

पहाड़ी और जैन शैली के चमकीले और शुद्ध रंगों का संतुलन उन्होंने अपने शुरूआत चित्रों में साधा।

- **झेन दर्शन और अमूर्त अवधारणा**

1960 तक पहुँचते–पहुँचते उन्होंने आकृतियों को पूर्णतः त्याग दिया और रंग स्थान तथा सतह के आपसी संबंधों की खोज आरंभ की। प्रत्येक चित्र में एक बीज होता है। वह दूसरे चित्र में अंकुरित होता है और विकसित होता है। कोई भी चित्र केवल एक कैनवस तक सीमित नहीं होता। वे अपने चित्रों में मूल तत्व का विस्तार करते चलते हैं, इसलिए उनके चित्रों में निरन्तर परिवर्तन होता रहता है। वस्तुतः चित्र कोई एक चीज़ नहीं होती, वह अनेक चीज़ों की समग्र संरचना होती है। प्रत्येक चित्र में एक प्रकार का रूपान्तर होता है और इस रूपान्तर का कभी अन्त नहीं होता। दो चित्र कभी भी एक से नहीं होते। परन्तु उनमें बीज एक ही होता है।

गायतोण्डे स्वयं को ''अमूर्त चित्रकार'' कहलाने के बजाय 'गैर वस्तुनिष्ठ चित्रकार' कहलाना पंसद करते थे। उनका मानना था कि अमूर्तता में भी किसी वाह्य वस्तु का धुंधला संदर्भ छिपे होने की संभावना बनी रहती है। जबकि उनका ध्येय वस्तु निरपेक्ष चेतना की अभिव्यक्ति था। गायतोण्डे की चित्रकला पर झेन बुद्धमठ परंपरा और भारतीय ध्यान दर्शन का गहरा प्रभाव था।

- उनके चित्र दर्शकों से मुखर संवाद नहीं करते बल्कि एक गहन मौन का निर्माण करते है जो दर्शक को अंतर्मुखी होने पर विवश करता है।
- कैनवास पर रंगो की परते केवल भौतिक सतह नहीं बनाती बल्कि एक असीम शून्य और ब्रह्मांडीय चेतना का आभास कराती है।

तकनीकी वैशिष्ट्य एवं कार्य शैली :–

गायतोण्डे की तकनीक भारतीय चित्रकला में अद्वितीय मानी जाती है। वे पारंपरिक ब्रश की तुलना में रोलर अखबार के टुकड़ों और पैलेट नाइफ का अत्यधिक प्रयोग करते थे।

द साइलेन्ट ऑब्ज़र्वर (वासुदेव शान्तु गायतोण्डे)

अनटाइटल्ड, 1952 (वासुदेव शान्तु गायतोण्डे)

- वे कैनवास पर रंगों की एक परत लगाते थे जिसके सूखने के बाद उस पर दूसरी रंग परत चढ़ाई जाती थी। वह प्रक्रिया अत्यंत धैर्यपूर्ण और समय लेने वाली थी।
- अखबार या नाइफ की सहायता से ऊपरी परत को आंशिक रूप से हटाकर नीचे की परत के रंगों और चमक को बाहर लाया जाता था। इससे कैनवास के भीतर से प्रकाश फूटता हुआ महसूस होता था।
- चित्रों के मध्य भाग में तैरती हुई रहस्यमयी आकृतियां या प्रतीक प्राचीन चीनी/जापानी लिपि और ब्राह्मी लिपियों का आभास कराते है।

तकनीकी घटक	प्रयुक्त विधि/सामग्री	कलात्मक एवं दार्शनिक प्रभाव
माध्यम	तैल रंग	रंगों में स्थायित्व गहनता एवं संघनता
प्रमुख उपकरण	रोलर, पैलेट नाइफ, अखबार के टुकड़े	एक समान रंग फैलाव व परतों को हटाने का प्रभाव
वर्ण योजना	एकवर्णी एवं द्विवर्णी	मानसिक एकाग्रता, शांति और आध्यात्मिक गहराई
रंग निष्पादन	पारभासी परतें	आंतरिक प्रकाश की दीप्ति एवं त्रिआयामी गहराई

- गायतोण्डे के चित्रों में रंग विधान एवं प्रकाश का संयोजन केवल सौंदर्य शास्त्रीय तत्व नहीं है वे एक मनः स्थिति का प्रतिनिधित्व करते है–
- वे अक्सर एक ही रंग (जैसे गहरा नीला, पीला, भूरा, हरा या लाल) के विभिन्न शेड्स का उपयोग करके पूरे कैनवास को आच्छादित करते थे।
- उनके चित्रों में बाह्य स्रोत से आने वाली छाया नहीं होती बल्कि रंग स्वयं भीतर से दीप्त प्रतीत होते है जैसे कैनवास के पीछे कोई दीपक जल रहा है।

अनटाइटल्ड, 1958 (वासुदेव शान्तु गायतोण्डे)

यद्यपि गायतोण्डे 'प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप' के एक प्रमुख सहयोगी रहे किंतु उनका दार्शनिक और कलात्मक मार्ग अन्य समकालीन कलाकारों से सर्वथा भिन्न था। जहाँ सूजा की कला में सामाजिक विद्रूपता और मानव आकृतियों का उग्र रूप था, तथा एम0एफ0 हुसैन में भारतीय लोक जीवन और पौराणिक संदर्भों की तीव्र गतिशीलता थी, वही गायतोण्डे की कला पूर्णतः अंतर्मुखी, शांत और आध्यात्मिक थी। उन्होंने भारतीय समकालीन कला को विषय वस्तु आधारित कला के दबाव से मुक्त करके शुद्ध रूपवादी चेतना का दर्जा किया। वासुदेव शान्तु गायतोण्डे का निधन 2001 में हुआ किंतु उनकी कलात्मक विरासत आज भी भारतीय आधुनिक कला का सर्वोच्च शिखर मानी जाती है। न्यूयार्क स्थिति विश्व प्रसिद्ध गुगेनहाइम संग्रहालय में 2014–15 में उनकी कलाकृतियों की ऐतिहासिक पूर्वव्यापी प्रदर्शनी आयोजित की गई जिसने उन्हें अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अमर बना दिया।

उनके चित्र विश्व की अग्रणी नीलामी संस्थाओं में भारतीय आधुनिक कला के उच्चतम मूल्यों पर नीलाम होते हैं जो उनकी कलात्मक महत्ता का प्रमाण है।
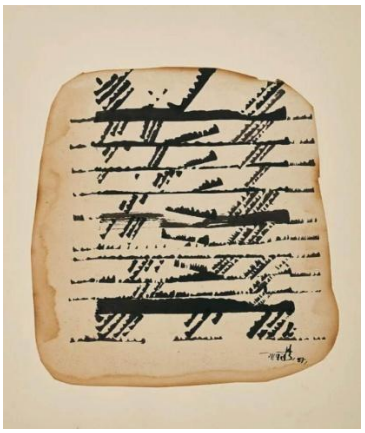
अनटाइटल्ड, 1987 (वासुदेव शान्तु गायतोण्डे)

निष्कर्ष

वी0एस0 गायतोण्डे का योगदान केवल नए तकनीकों के प्रयोग तक सीमित नहीं है। उन्होंने भारतीय अमूर्त कला को एक अद्वितीय दार्शनिक और आध्यात्मिक ऊँचाई प्रदान की। उनकी संपूर्ण कला यात्रा यह सिद्ध करती है कि चित्रकला केवल बाह्य जगत को दृश्य रूप देने का माध्यम नहीं है, बल्कि वह आत्मा के मौन का गहन दृश्य रूपांतरण है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. कपूर, गीता (1978) : कंटेम्परेरी इंडियन आर्टिस्ट, विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
2. नायक, जेसल (2014) : वासुदेव शांतु गायतोण्डे : पेंटिग एण्ड प्रोसेस, पेटिंग एज लाइफ।
3. गुगेनहाइम म्यूजियम पब्लिकेशन (2014)
4. डालमिया, यशोधरा (2001) : द मेकिंग ऑफ मॉडर्न इण्डियन आर्ट, द प्रोग्रेसिव।
5. चतुर्वेदी, ममता : 'भारतीय आधुनिक साहित्य, कला से संबंधित अध्ययन।
6. डॉ0 गिरिराज किशोर अग्रवाल : भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास।